अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकर के कथा साहित्य का विश्लेषण

शोधार्थी :-कुमारी राजश्री पांडुरंग नामये
(मुंबई विश्वविद्यालय)

शोध निर्देशिका:-डॉ.श्रीमती माधुरी जोशी
(एसोसिएट प्रोफेसर,महाराष्ट्र शासनाचे इस्माइल युसुफ महाविद्यालय)

शोध सार

सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकर, दोनों ही प्रसिद्ध लेखिकाएँ, भारतीय साहित्य के विभिन्न पहलुओं को अपने अद्वितीय रूप से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समय, स्थान, और पात्रों के बारे में विचार करने के लिए एक आधार प्रदान करती हैं, जिससे पाठक उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को समझ सकते हैं। यह तुलनात्मक अध्ययन यहाँ इन दोनों लेखिकाओं के कहानी साहित्य के महत्वपूर्ण पहलुओं को गहराई से समझने का प्रयास करेगा।

सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकर, दोनों ही भारतीय साहित्य के प्रमुख लेखिकाएँ हैं, जिनकी कहानियाँ और उपन्यास विशिष्ट समय और समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों की कहानीकारी शैलियों में अंतर होने के बावजूद, उनके लेखन में समय का महत्वपूर्ण रोल है, जो पाठकों को उनकी कहानियों के पात्रों और संदर्भ को समझने में मदद करता है। यह अध्ययन उनके कहानी साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिससे हम उनके लेखन की विशेषता, विचारधारा, और समय के साथ परिवर्तन को समझ सकें।

कुंजीपटल :- विशिष्ट, विचारधारा, तुलनात्मक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

सुधा अरोड़ा के काम की शुरुआत सितंबर,1965में हुई, जब उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई थी। इसके बादउन्होंने कई कहानियाँ, उपन्यास और कवितासंग्रह लिखे, जिनमें 'बगैर तलाशे हुएयुद्,धविराम,महानगर की मैथिली,काला शुक्रवार कांसे,का गिलासरहोगी ,मेरी तेरह कहानियाँ, ,तुम वही२१ श्रेष्ठ कहानियाँएक औरत तीन ब,टा चार,अन्नपूर्णा मंडल की आख़िरी चिठ्ठीयही , कही थाघर,(उपन्यास)रचेंगे हम साझा इतिहास काम से काम एक दरवाज़ा,शामिल हैं। वहींप्रिया तेंडुलकर की शुरुआत1974 में 'श्याम बेनेगल' की फ़िल्म अंकुर,1985में निर्मित सबसे पहले टीवी अवतार 'रजनी'इस धारावाहिक में उन्होंने भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बेखौफ आवाज़ उठानेवाली एक साधारण गृहिणी का किरदार निभाया। उनकी कहानियाँभी सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक मुद्दों पर आधारित हैंऔर उन्होंने कई पुरस्कार भी जीते हैं।

इन दोनों लेखिकाओं के लेखन को तुलना करते समय, हमें उनके समय-स्थानिक परिवेश की समझ करने की जरूरत होती है। इस अध्ययन में, हम सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकर के लेखन की समय-स्थानिक परिवेश की तुलनात्मक विश्लेषण करेंगे, जिसमें हम उनके लेखन की अद्वितीयता, सामाजिक परिदृश्य, और मुख्य चिंताओं को समझेंगे। इन दोनों लेखिकाओं के लेखन को तुलना करते समय, हमें उनके समय-स्थानिक परिवेश की समझ करने की जरूरत होती है। इस अध्ययन मेंहम सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकर के लेखन की समय-स्थानिक परिवेश की तुलनात्मक विश्लेषण करेंगे, जिसमें हम उनके लेखन की अद्वितीयता, सामाजिक परिदृश्यऔर मुख्य चिंताओं को समझेंगे।

अपने विषयगत फ़ोकस के अलावा, सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकरअपनी कहानियों में प्रामाणिकता और सामाजिक यथार्थवाद के प्रति प्रतिबद्धता साझा करती हैं।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

उनकी कहानियाँ अक्सर वास्तविक जीवन के अनुभवों और सामाजिक अवलोकनों से प्रेरित होती हैं, जो समाज के विभिन्न स्तरों की महिलाओं के जीवन पर एक कच्चा और बिना फ़िल्टर किया हुआ नज़रिया प्रदान करती हैं। यथार्थवाद के प्रति यह प्रतिबद्धता सुनिश्चित करती है कि उनके काम व्यापक दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित हों, जिससे पाठक प्रचलित सामाजिक मुद्दों पर विचार करें।

दोनों लेखिकाएँ चरित्र विकास में भी महारत दिखाते हैं, बहुआयामी महिला नायक बनाते हैं जो दोषपूर्ण और वीर दोनों हैं। सुधा अरोड़ा जी की कहानियों में, पात्र अक्सर महत्वपूर्ण व्यक्तिगत विकास से गुजरते हैं, बेटियों, पत्नियों और माताओं के रूप में अपनी भूमिकाओं की जटिलताओं को नेविगेट करते हैं। इन पात्रों की यात्राएँ आत्मनिरीक्षण और आत्म-खोज के क्षणों से चिह्नित हैं, जो कथाओं में गहराई और प्रामाणिकता जोड़ते हैं। दूसरी ओरप्रिया तेंडुलकर अधिक मुखर और विद्रोही पात्रों को गढ़ने की कोशिश करते हैं जो सीधे सामाजिक अन्याय का सामना करते हैं। ये नायक अपनी असहमति व्यक्त करने और साहसिक कदम उठाने से नहीं डरते, जो प्रिया तेंडुलकर की अपनी कार्यकर्ता भावना को दर्शाता है।

'उधड़ा हुआ स्वेटर' कहानी की दोनों बेटियों को लगता है कि मर्द जात किसी भी औरत के लिए ठीक नहीं होते। पर पिता की त्रासदी हैं कि दोनों बेटियों का विवाह करें। दोनों पढ़ी-लिखी हैं। पूरे परिवेश से अवगत हैं। ये दोनों पुरुष जाति से द्वेष रखती हैं।

इसका स्पष्ट उल्लेख शिवा तथा बेटियों के पिता आशीष कुमार के संवादों से स्पष्ट होता है- "आपकी दो बेटियाँ हैं न! शादी नहीं की उन्होंने ?

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

नहीं।दो में से किसी..?

हाँ दो में से किसी ने भी नहीं.....!

क्यों भला ऐनी ग्रजेज अगेन्स्ट मैरेज ?

हाँ, वे कहती हैं- नो मैन इज वर्थ अ वुमैन।

कौन सी बेटी कहती है? बड़ी या छोटी !

इसी तरहप्रिया तेंडुलकर की "लग्न संपल्यावर " शादी के बाद एक महिला के जीवन में बदलाव की खोज करती है। प्रिया तेंडुलकर का नायक एक साहसी और मुखर चरित्र है जो वैवाहिक जीवन के साथ आने वाले बदलावों और चुनौतियों से जूझता है। कहानी महिलाओं पर लगाए गए सामाजिक दबावों और अपेक्षाओं पर प्रकाश डालती हैऔर यह बताती है कि ये कैसे उनकी आत्म और एजेंसी की भावना को प्रभावित करते हैं ।प्रिया तेंडुलकर का दृष्टिकोण अधिक टकरावपूर्ण है, जिसमें मुख्य पात्र अपनी नई भूमिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों पर खुलकर सवाल उठाता है और उनका विरोध करता है। कथा में प्रिया तेंडुलकरकी विशिष्ट बुद्धि और तीखी सामाजिक टिप्पणी शामिल है, जो इसे विवाह की पारंपरिक संस्था की एक शक्तिशाली आलोचना बनाती है।

"बगैर तराशे हुए" मेंसुधा अरोड़ा ने मीरा के इर्द-गिर्द एक कहानी गढ़ी है, जो एक गृहिणी है जो अपने परिवार की ज़रूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने में अपना दिन बिताती है।

शीर्षकजिसका अनुवाद "अनपॉलिश्ड" है, रूपक रूप से मीरा के जीवन और पहचान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे समाज द्वारा परिष्कृत या मान्यता नहीं दी गई है। सुधा अरोड़ा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

जी की कथा मीरा के आंतरिक एकालाप को पकड़ती है क्योंकि वह अपनी नीरस दिनचर्या से गुज़रती है, अपने खोए हुए सपनों और आकांक्षाओं को दर्शाती है। कहानी उसके त्याग और प्रतिदिन प्रदर्शित किए जाने वाले मौन सहनशीलता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। मीरा के आत्मनिरीक्षण के क्षण अधूरी संभावनाओं की गहन भावना को प्रकट करते हैंक्योंकि वह सोचती है कि अगर उसने अपनी इच्छाओं का पीछा किया होता तो उसका जीवन कैसा होता। सुधा अरोड़ा जी का सरल लेकिन मार्मिक गद्य पाठकों को मीरा के आंतरिक संघर्ष और उसके द्वारा प्रदर्शित शांत लचीलेपन के साथ गहराई से सहानुभूति रखने की अनुमति देता है।

"लग्न संपल्यावर" इस कहानी में, जिसका अनुवाद "शादी के बाद" होता है, प्रियातेंडुलकर अंजली के जीवन को प्रस्तुत करती हैंएक युवा महिला जिसका जीवन उसकी शादी के बाद काफी बदल जाता है। कथा अंजली के उत्साह और उसके नए जीवन के सपनों के साथ शुरू होती हैलेकिन उसे वैवाहिक अपेक्षाओं की कठोर वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है। प्रिया तेंडुलकर ने अंजली के शुरुआती उत्साह को निराशा में बदलते हुए दिखाया हैक्योंकि वह उस पर लगाए गए प्रतिबंधों और जिम्मेदारियों का सामना करती है। कहानी एक पत्नी और बहू की पारंपरिक भूमिकाओं के अनुरूप ढलने के दबाव को उजागर करती है, जो उसके व्यक्तित्व को दबा देती है। अंजली की निर्भीकता स्पष्ट है क्योंकि वह इन सामाजिक मानदंडों पर सवाल उठाती है और उससे अपेक्षित निष्क्रिय स्वीकृति के खिलाफ लड़ती है। तेंदुलकर ने अंजलि के भोलेपन से मुखरता तक के सफर को दर्शाने के लिए तीखे संवाद और तीखी सामाजिक टिप्पणियों का इस्तेमाल किया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

कहानी पारंपरिक वैवाहिक संरचना की आलोचना के रूप में काम करती है, जो पाठकों से विवाह संस्था के भीतर व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति के महत्व पर विचार करने का आग्रह करती है।

निष्कर्ष :-

सुधा अरोड़ा और प्रिया तेंडुलकरदोनों ही प्रख्यात भारतीय लेखिकाएँ अपनी अनूठी कला और लेखन शैली के माध्यम से विभिन्न समकालीन सामाजिक मुद्दों, संघर्षो और विचारधाराओं को प्रस्तुत करती है।इस तुलनात्मक अध्ययन मेंहम उनके लेखन के लौकिक और स्थानिकसंधर्भो में गहराई से उतरते हैं और उनकी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से उनकी विशिष्टता को समझने का प्रयास करते हैं।साहित्य उस समाज को दर्शाता है जिससे वह उभरता है, जो उसके मूल्यों, चुनौतियोंऔर परिवर्तनों का दर्पण होता है।सुधा अरोड़ा और प्रियातेंडुलकरहालांकि अलग-अलग समय अवधि और सन्धर्भों में लिखती हैंलेकिन अपने आख्यानों के माध्यम से मानवीय स्थिति और सामाजिक पेचीदगियों को चित्रित करने का एक साझा लक्ष्य करती हैं। इस अध्ययन काउद्देश्य दोनोंलेखिकाओंद्वारा इस्तेमाल किए गए विषयों, पात्रों और लेखन शैलियों की खोज करते हुए उनके साहित्यक कार्यों का तुलनात्मकविश्लेषणकरना है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 3, (July-September 2021)

संदर्भ

1. अरोड़ा, सुधा. "बगैर तराशे हुए." नवभारत प्रकाशन, 2005.

Pgno.6

2. तेंडुलकरप्रिया. "लग्न संपल्यावर " समय सागर प्रकाशन, 1992.

3. गुप्ता, आर.के. "सुधा अरोड़ा के उपन्यासों में महिला पात्र." भारतीय साहित्य, खंड 40, संख्या 4, 1996, पृष्ठ 107-114.

4. मिश्रा, एस.सी. "प्रियातेंडुलकर के उपन्यासों में विवाहित जीवन का यथार्थवादी चित्रण." जर्नल ऑफ इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश, खंड 23, संख्या 2, 1995, पृष्ठ 45-52.

5. वर्मा, रितु. "सुधा अरोड़ा के उपन्यासों में महिला पहचान की खोज." महिला अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय मंच, खंड 25, संख्या 6, 2002, पृष्ठ 725-734.

6. सिंह, एन.के. "प्रियातेंडुलकर के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवाद." इंडियन जर्नल ऑफ पोस्टकोलोनियल लिटरेचर, खंड 9, संख्या 1, 2008, पृष्ठ 89-98।

7. अरोड़ादीपिका। "सुधा अरोड़ा के उपन्यासों में मुक्ति का विषय।" जर्नल ऑफ साउथ एशियन लिटरेचर, खंड 23, संख्या 3, 1998, पृष्ठ 67-76।

8. तेंडुलकरराजेश। "प्रियातेंडुलकर के उपन्यासों पर शहरीकरण का प्रभाव।" शहरी अध्ययन, खंड 15, संख्या 4, 2005, पृष्ठ 345-356।

****